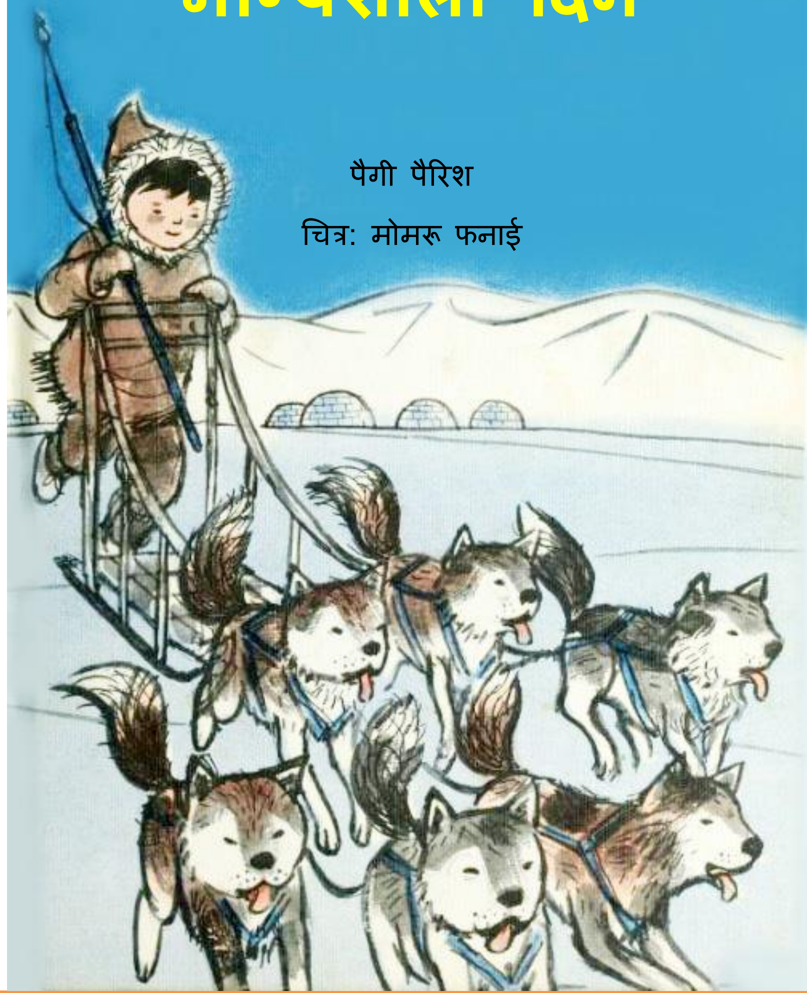
ऊटा का भाग्यशाली दिन

पैगी पैरिश

चित्र: मोमरू फनाई



ऊटा का भाग्यशाली दिन

पैगी पैरिश

चित्र: मोमरू फनाई



ऊटा का
भाग्यशाली दिन





ऊटा बहुत जल्दी जाग गया.

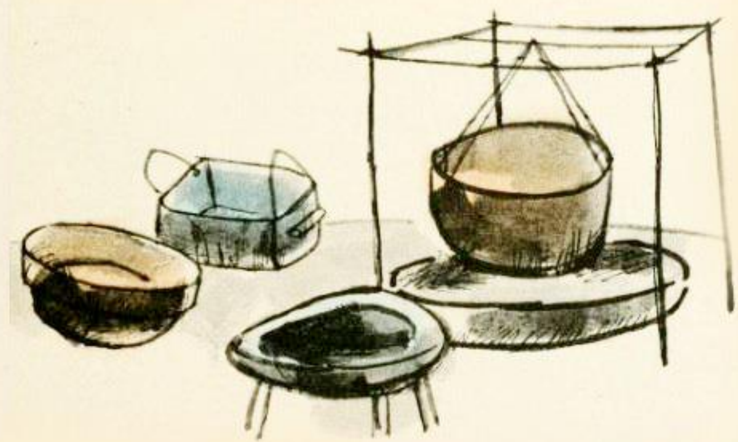
"मैं बहुत भूखा हूँ," उसने कहा,
"और यहाँ बेहद ठंड है."



आग जलाने के लिए तेल नहीं था.

पकाने की हांडी में मांस नहीं था.

उसने कहा, “अरे, शिकारी मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले गए!"



उसने आग के स्थान पर देखा.

ऊटा ने शिकार पर जाने के लिए बड़ों से विनती की थी.

लेकिन उसके पिता ने कहा था कि शिकार करना छोटे लड़कों का काम नहीं था.

"मैं मदद कर सकता था," ऊटा ने सोचा.

"और हमें मदद की सख्त ज़रूरत है. हमारे लोग एकदम भूखे हैं.

"अगर हमें मांस नहीं मिलेगा तो हमें अपने कुत्तों को खाना होगा."

ऊटा अपने कुत्तों को नहीं खाना चाहता था.

"मुझे पता है," उसने कहा.

"मैं अपने कुत्तों को साथ में लूंगा.
मैं अपना स्लेज लूंगा.
और अब मैं खुद शिकार करने जाऊंगा."



ऊटा ने अपने कुत्तों को एक-एक करके बुलाया.

उसने कुत्तों को अपनी स्लेज (बेपहिया गाड़ी) से बाँधा.

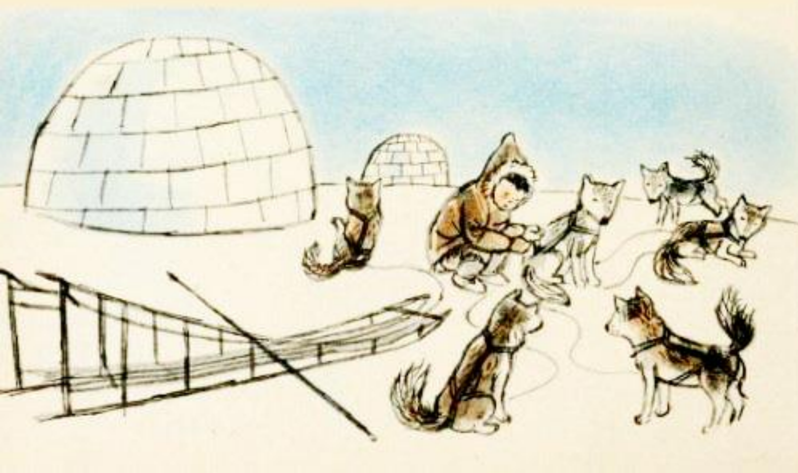
उसने साथ में अपना भाला और चाकू भी लिया.

फिर वो शिकार कर लिए निकल पड़ा.

"मैं नहीं चाहता कि मेरे लोग भूखे मरें," उसने कहा.

"काश, आज का दिन मेरे लिए भाग्यशाली हो!"





ऊटा की स्लेज बर्फ़ पर तेज़ दौड़ी.

उसने जानवरों के पदचिन्हों की तलाश की.

लेकिन उसे केवल अपने कुत्तों के पदचिन्ह ही दिखाई दिए.

फिर ऊटा ने जमे हुए समुद्र की ओर देखा.

उसे दूर पर एक काला धब्बा दिखाई दिया.

वो धब्बा बिल्कुल हिल नहीं रहा था.

"शायद वो कोई सील हो!" ऊटा ने सोचा.

"सील का मांस स्वादिष्ट होता है.
सील की चर्बी से घर में गर्म आग भी बनेगी.
काश वो एक सील हो!"

ऊटा ने अपनी स्लेज बर्फ पर दौड़ाई.

धीरे-धीरे धब्बा, बड़ा-और-बड़ा होता गया.



"वालरस!
वो एक वालरस है!" ऊटा ने कहा.

"यह वालरस तो सील से कहीं बड़ा है."

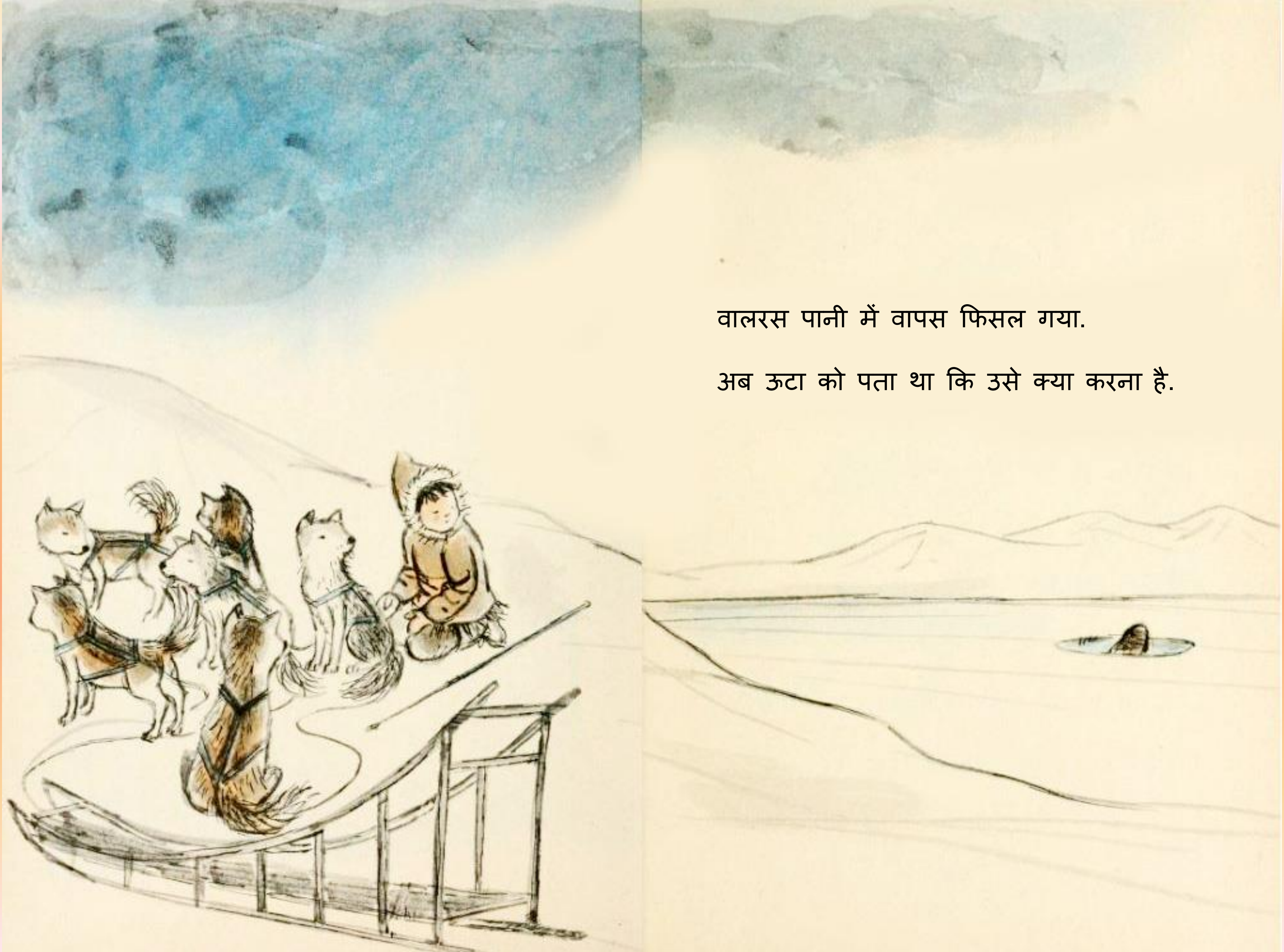
उसने वालरस को ध्यान से देखा.





वालरस पानी में वापस फिसल गया.

अब ऊटा को पता था कि उसे क्या करना है.



उसने बर्फ में एक गहरा संकरा छेद खोदा.

उसने अपने भाले की डोर के अंत को

उस छेद में डाल दिया.

फिर उसने डोर के चारों ओर पानी डाला.

"जल्द ही," उसने कहा. "छेद में पानी जम जाएगा. जब मैं अपना भाला फेकूंगा, तो फिर डोर तन जाएगी. मैं नहीं चाहता कि वो वालरस भाग जाए."

फिर ऊटा वहीं प्रतीक्षा करने के लिए बैठ गया.





ऊटा स्थिर रहा. एकदम स्थिर.

वो वालरस की नज़र से दूर रहा.

वो चुप रहा ताकि वालरस उसकी आवाज़ सुन न पाए.

ऊटा ने इंतजार किया. उसने काफी देर इंतजार किया.

वो ठंडा और भूखा था, लेकिन वो बिलकुल भी नहीं हिला.

अचानक उसे छप की एक आवाज सुनाई दी.

उसने एक काली नाक को छेद से बाहर निकलते हुए देखा.

फिर एक झुर्रीदार सिर, उस नाक के पीछे-पीछे निकला.







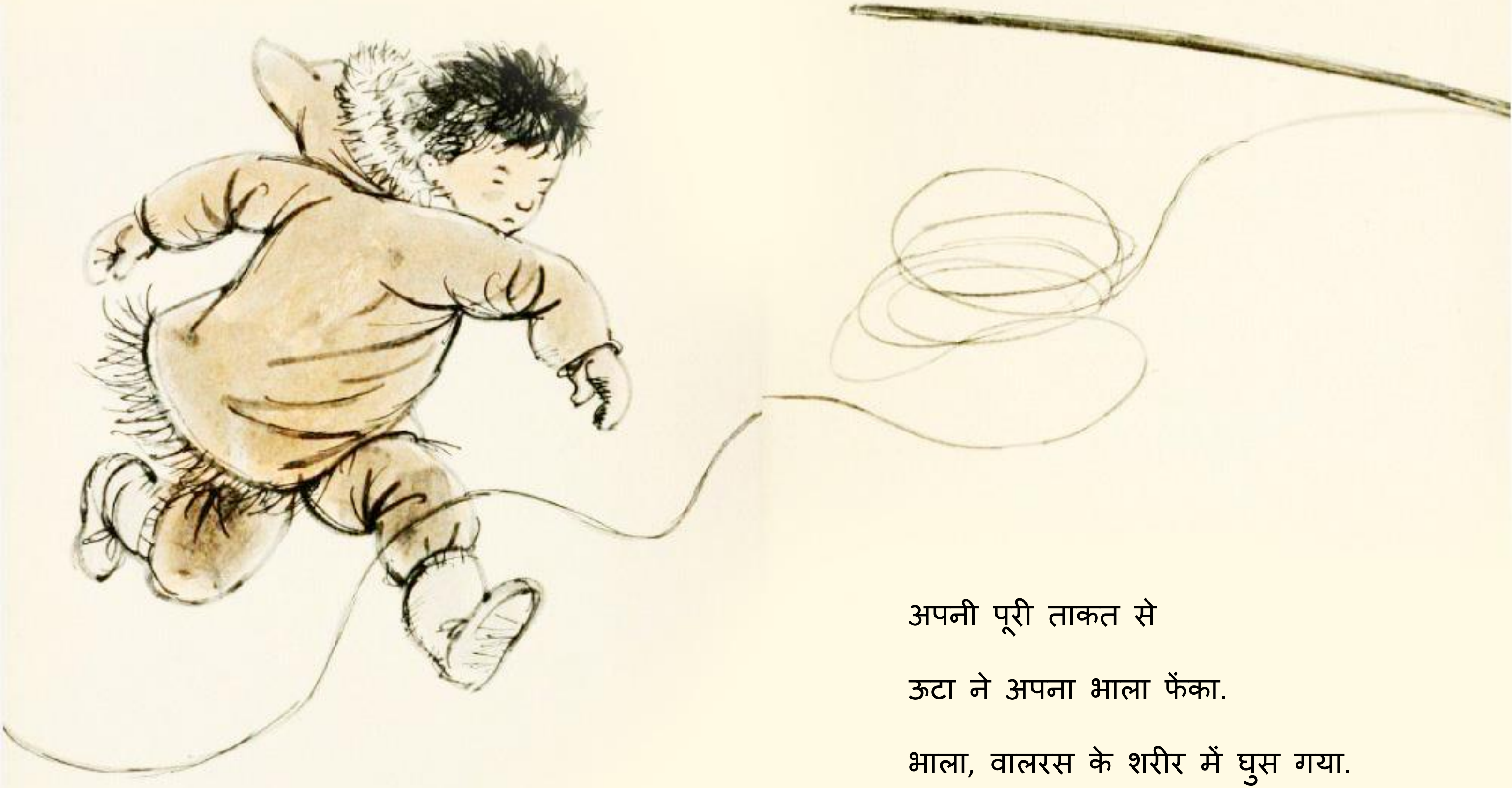
ऊटा ने अपना भाला बाहर निकाला.

उसने अपनी सांस रोके रखी.

उसने सही समय का इंतजार करने की ठानी.

फिर वालरस ने खुद को पानी से और अधिक बाहर निकाला.

"अब सही समय है!" ऊटा ने सोचा.



अपनी पूरी ताकत से

ऊटा ने अपना भाला फेंका.

भाला, वालरस के शरीर में घुस गया.

वालरस, बर्फ पर गिर पड़ा.

ऊटा ने उस बड़े जानवर को बर्फ पर पड़े देखा.

"मैंने उसका शिकार किया!" वो फुसफुसाया.

"आज मैंने एक वालरस का शिकार किया!"

ऊटा मुस्कुराया. "खाना!" वो चिल्लाया.

"अब हर किसी के लिए भोजन होगा, और हर
घर में आग जलाने के लिए तेल होगा!"





कुत्ते भौंकने लगे.

ऊटा, स्लेज की ओर दौड़ा.

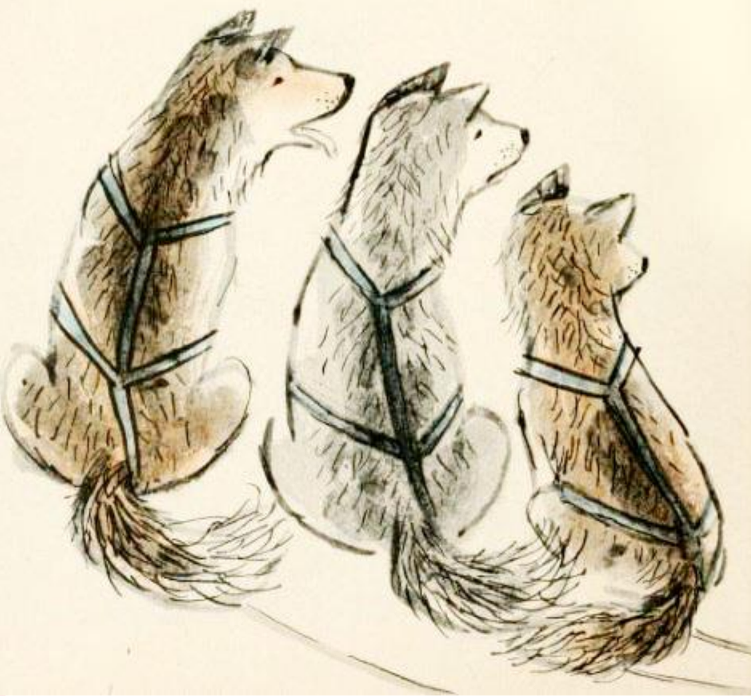
"चलो चलें!" वो चिल्लाया.

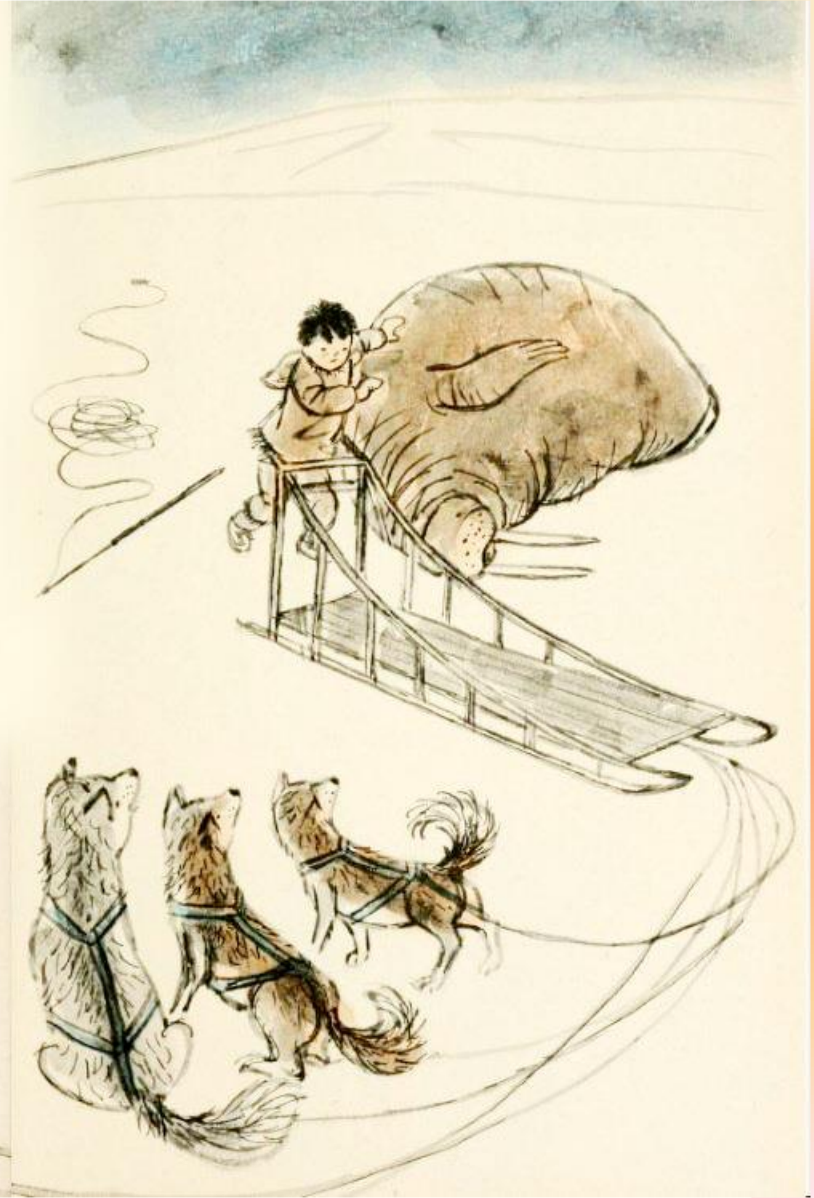
"चलो, उस वालरस को घर ले चलें."

ऊटा स्लेज को वालरस के करीब लाया.

उसने वालरस को स्लेज पर लादने की कोशिश की.

लेकिन वो भारी वालरस को हिला तक नहीं सका.





उसने वालरस को अपनी पूरी ताकत से खींचा, लेकिन वालरस फिर भी नहीं हिला.

ऊटा ने कहा, "काश यहां मदद के लिए और लोग होते."

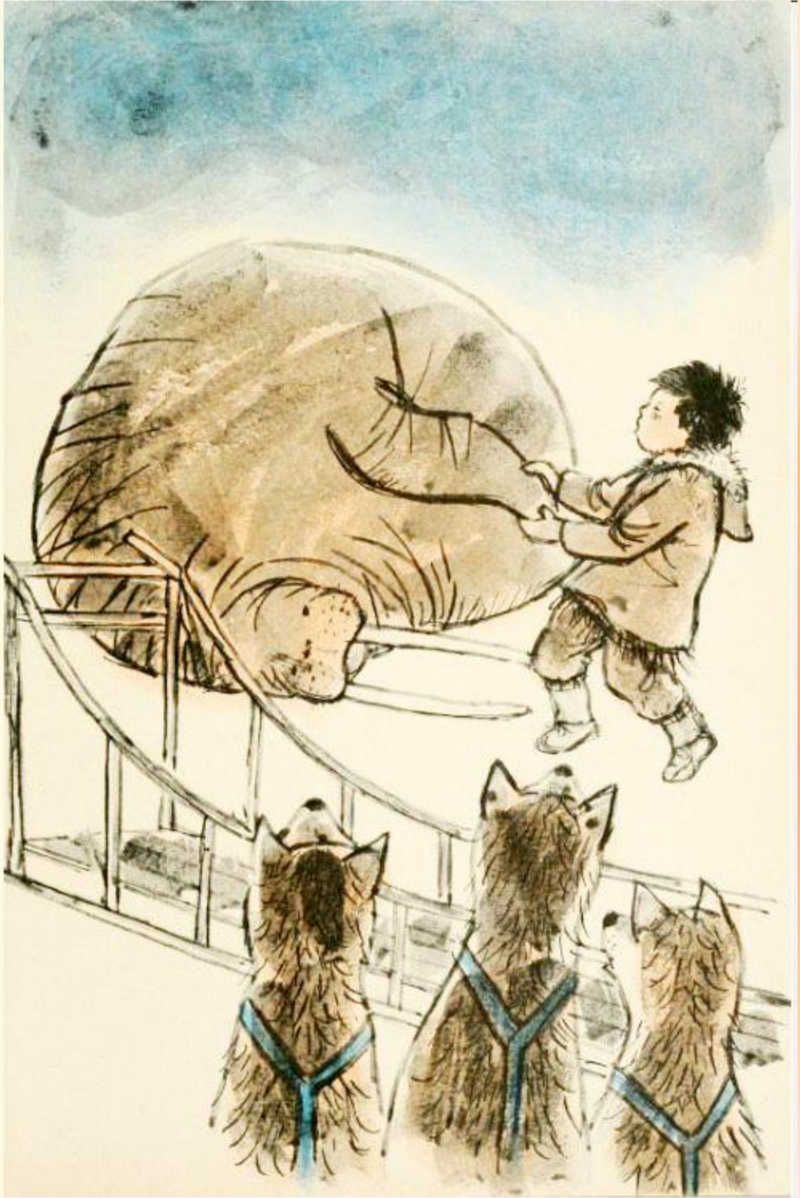
वो वालरस को वहां नहीं छोड़ सकता था.

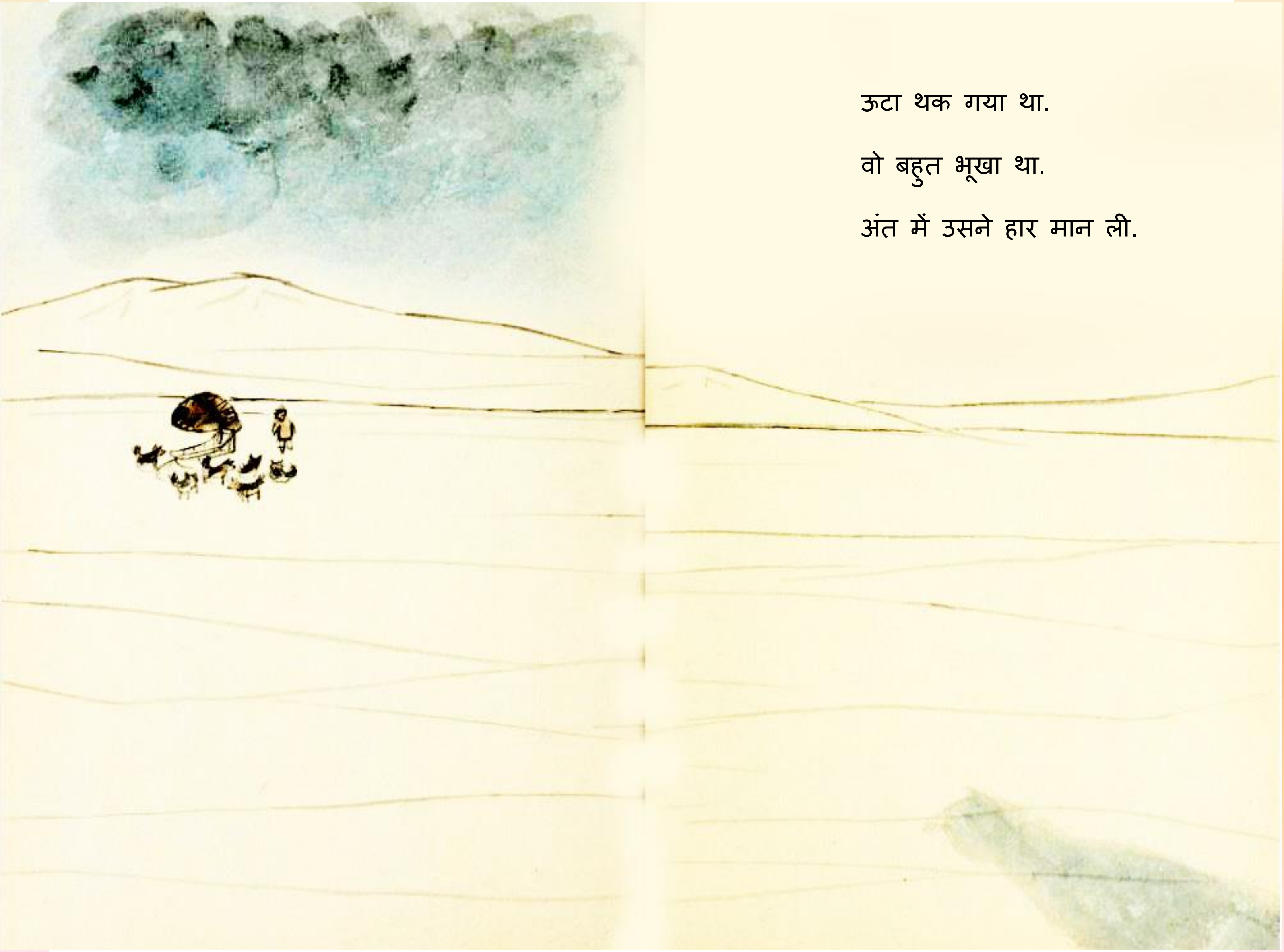
नहीं तो कोई और वालरस को ले जाता.

गांव में ऊटा के लोगों को मांस की सख्त जरूरत थी.

ऊटा ने बार-बार वालरस को हिलाने की कोशिश की.

लेकिन वो सफल नहीं हुआ.





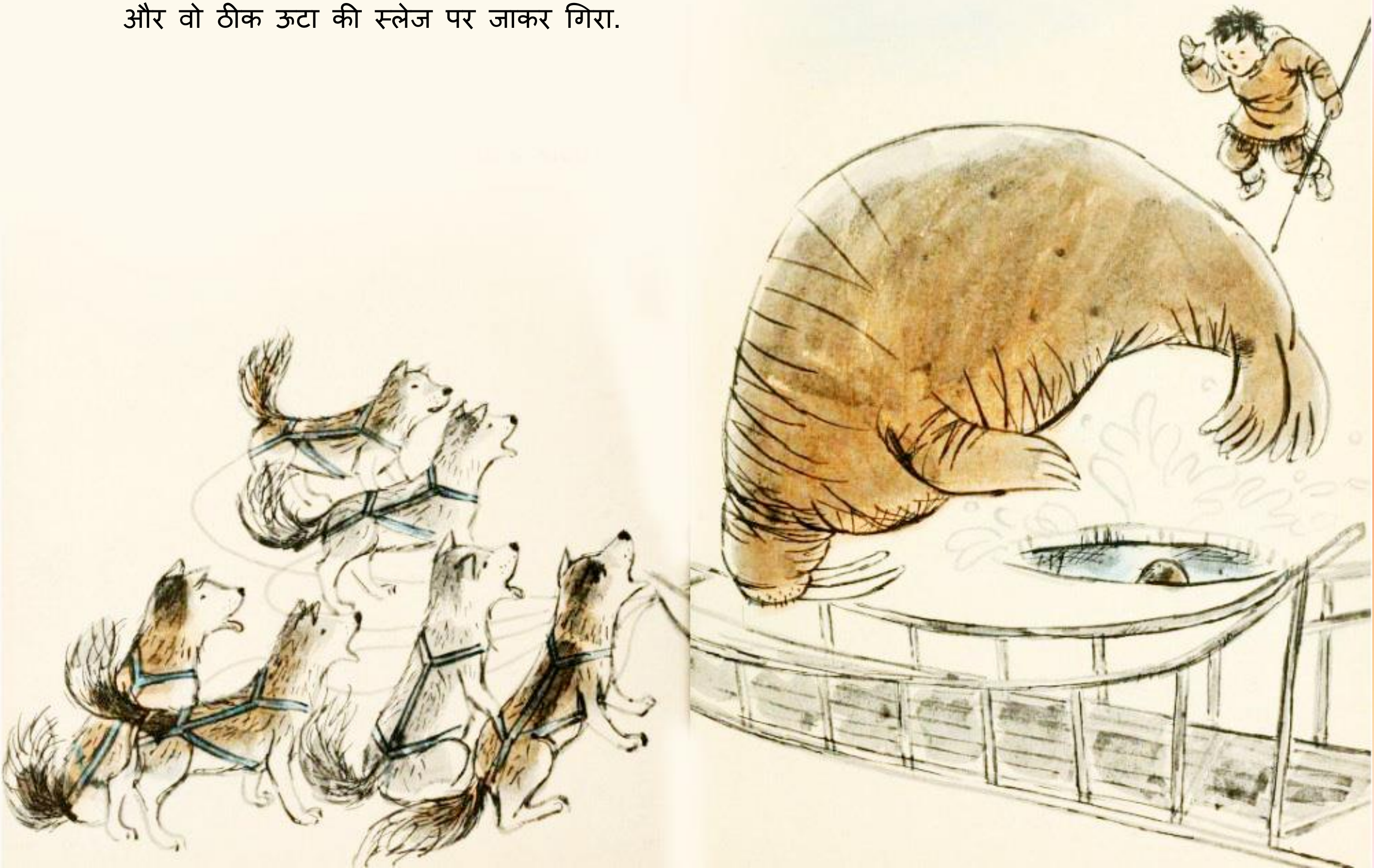
ऊटा थक गया था.

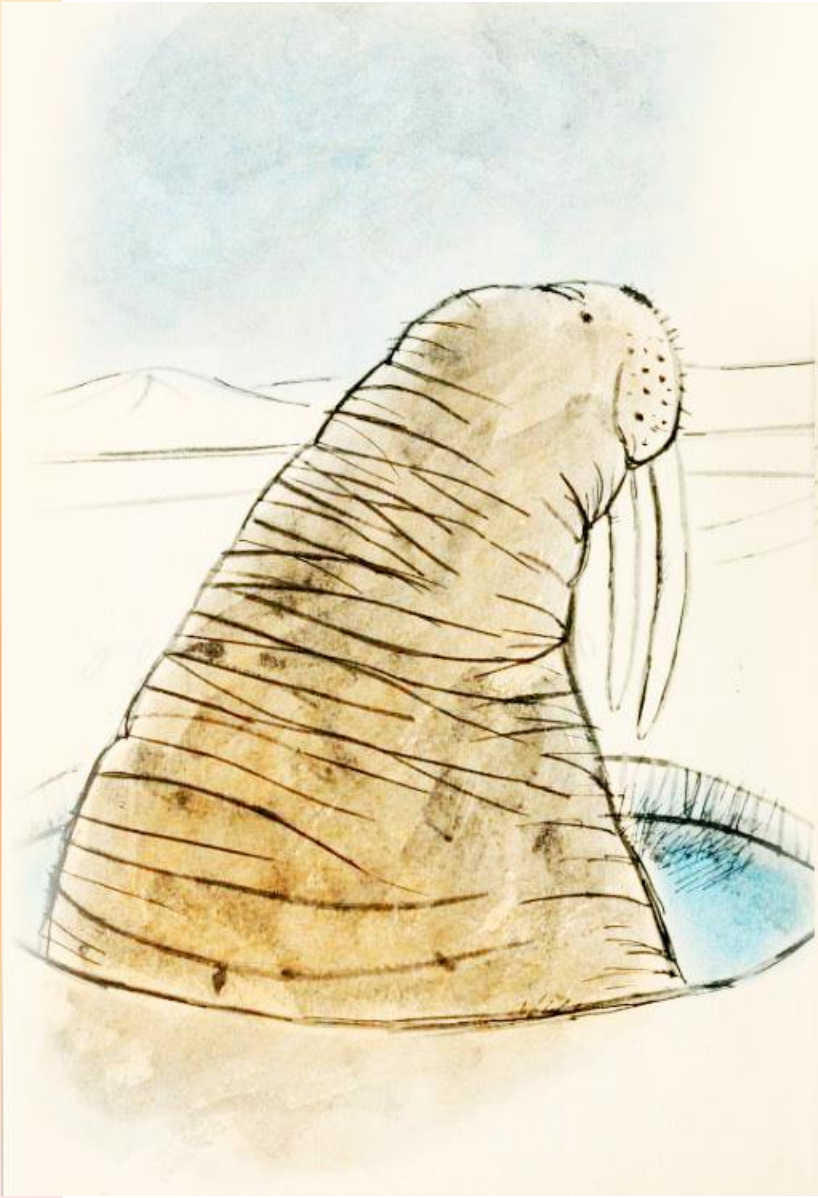
वो बहुत भूखा था.

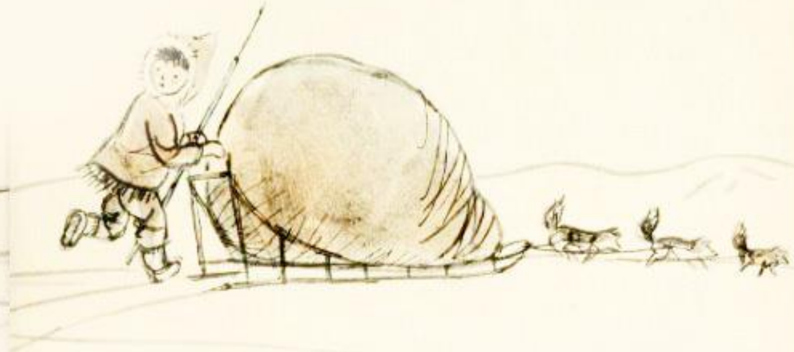
अंत में उसने हार मान ली.

अचानक वालरस छेद में से बाहर निकला.

और वो ठीक ऊटा की स्लेज पर जाकर गिरा.







"यह ज़रूर कोई जादू होगा," ऊटा फुसफुसाया.

फिर उसने जादू देखा.

उसने एक और बड़ा वालरस देखा!

"मेरे लिए बस एक ही वालरस काफी है!"
उसने कहा.

फिर ऊटा, स्लेज के साथ चल दिया.

कुत्तों ने स्लेज को बर्फ पर तेज़ी से खींचा.

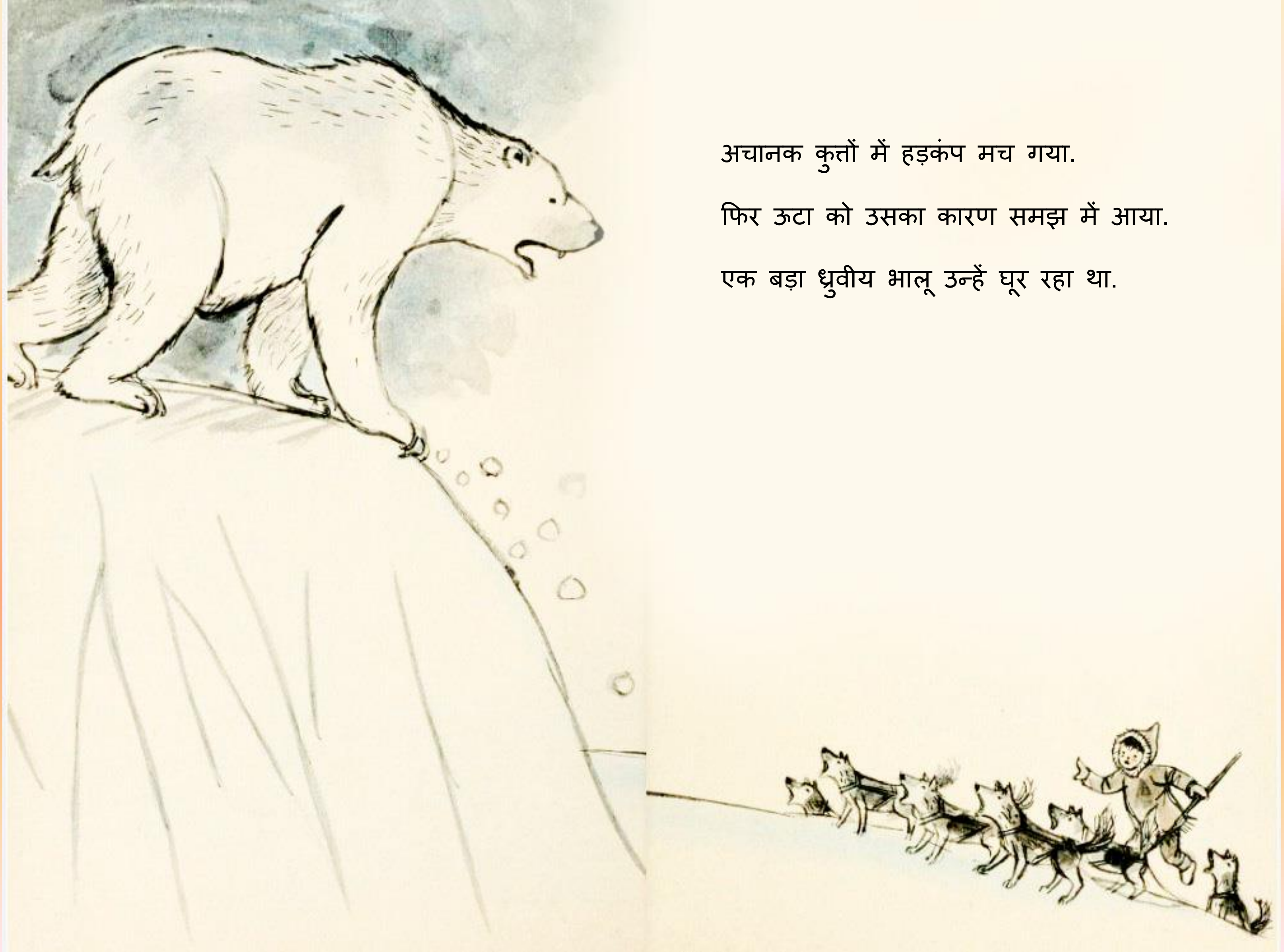
लेकिन बीच में कुत्ते रुके और उन्होंने हवा को सूँघा.

"वो क्या है? वो क्या है?" ऊटा ने पूछा.

"चलो, घर चलो."

लेकिन कुत्ते गुर्राने लगे.

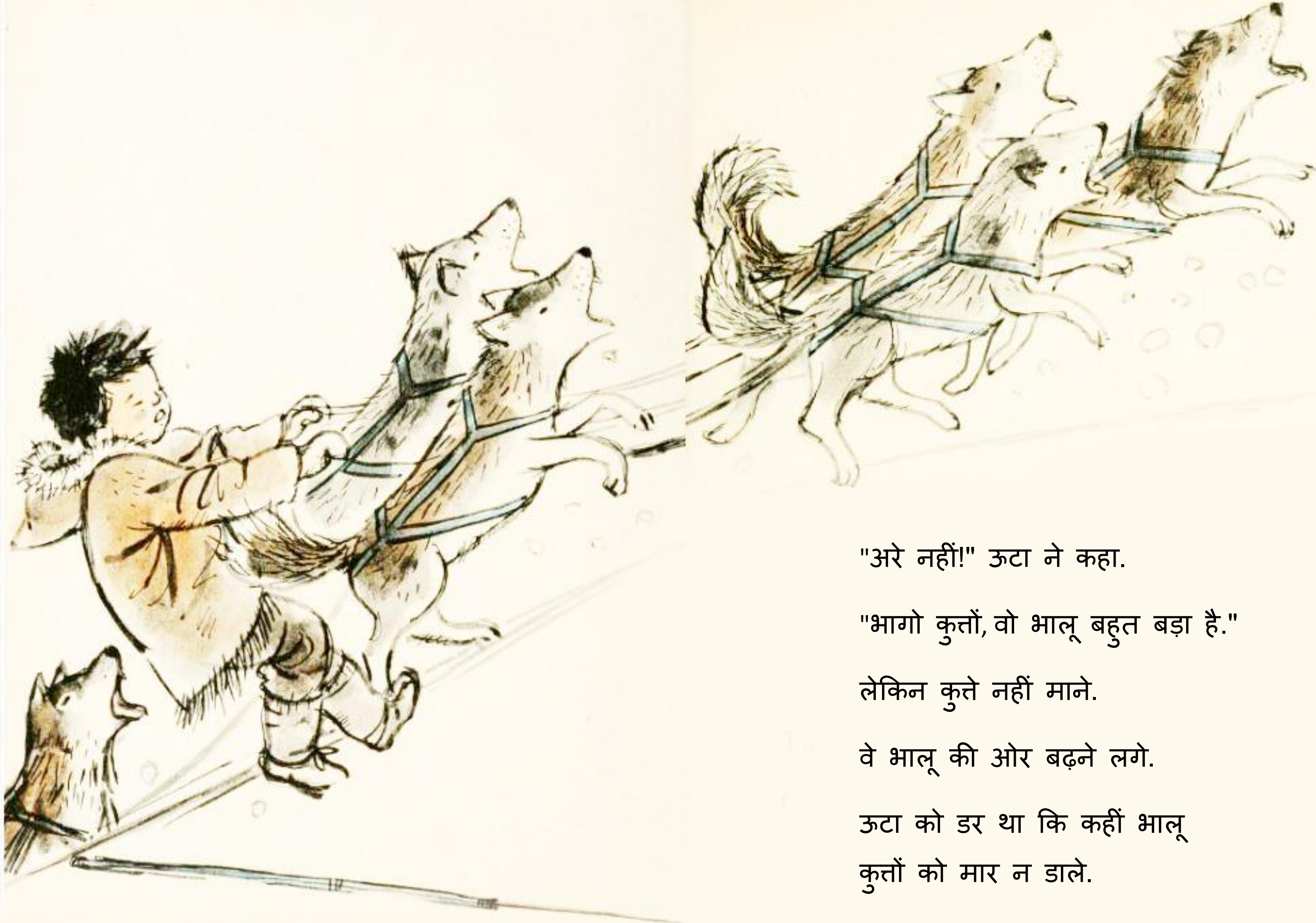




अचानक कुत्तों में हड़कंप मच गया.

फिर ऊटा को उसका कारण समझ में आया.

एक बड़ा ध्रुवीय भालू उन्हें घूर रहा था.



"अरे नहीं!" ऊटा ने कहा.

"भागो कुत्तों, वो भालू बहुत बड़ा है."

लेकिन कुत्ते नहीं माने.

वे भालू की ओर बढ़ने लगे.

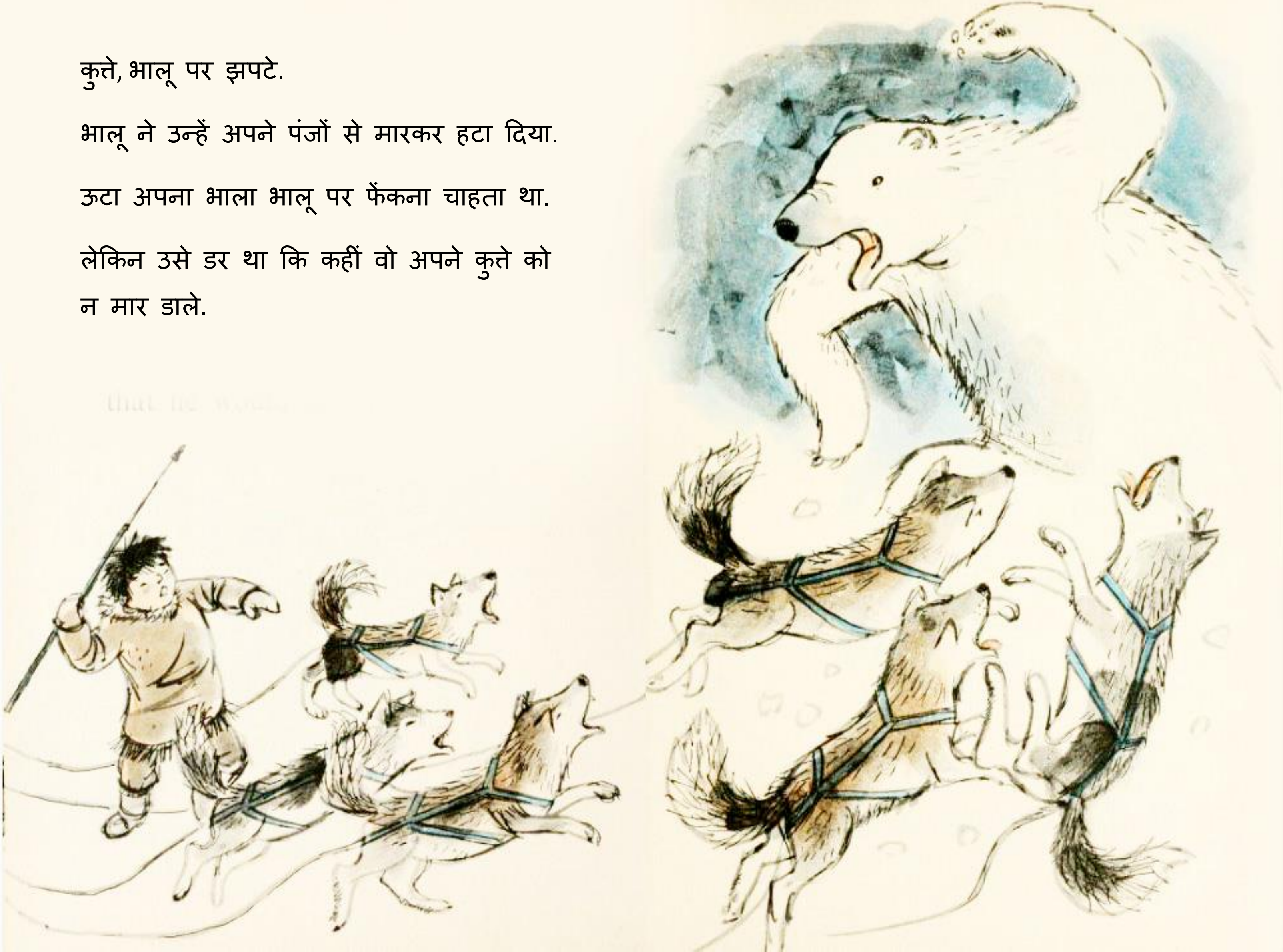
ऊटा को डर था कि कहीं भालू
कुत्तों को मार न डाले.

कुत्ते, भालू पर झपटे.

भालू ने उन्हें अपने पंजों से मारकर हटा दिया.

ऊटा अपना भाला भालू पर फेंकना चाहता था.

लेकिन उसे डर था कि कहीं वो अपने कुत्ते को न मार डाले.







तब ऊटा के दिमाग में एक विचार आया.

वो भालू के पीछे एक चट्टान पर चढ़ गया.

उसने अपने चाकू से बर्फ का एक टुकड़ा काटा.

उसने बर्फ के टुकड़े को भालू की ओर फेंका.

"काश यह तरकीब काम करे," उसने कहा.



बर्फ का टुकड़ा भालू से जाकर टकराया.

भालू के गले से एक चीख़ निकली.

फिर भालू मुड़ा और भाग गया.



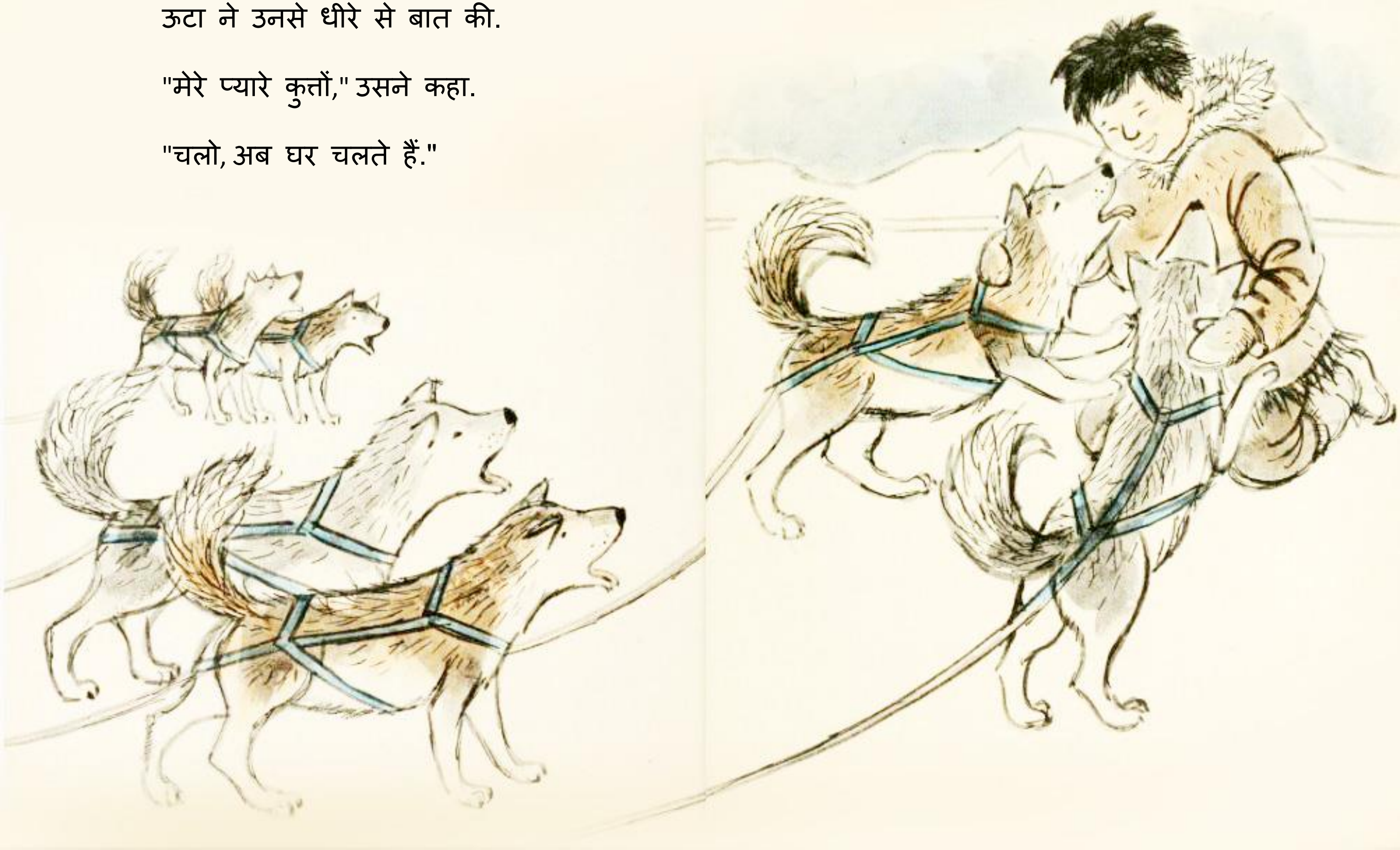
ऊटा, चट्टान से नीचे उतरा.

कुत्ते अभी भी भौंक रहे थे.

ऊटा ने उनसे धीरे से बात की.

"मेरे प्यारे कुत्तों," उसने कहा.

"चलो, अब घर चलते हैं."





स्लेज बर्फ पर तेज़ी से फिसलने लगी.

जल्द ही उन्होंने अपना गांव देखा.

कुत्ते भौंकने लगे.

ऊटा चिल्लाने लगा.

"खाना! सबके लिए खाना!"

औरतें और बच्चे अपने-अपने इग्लू से बाहर भागे.

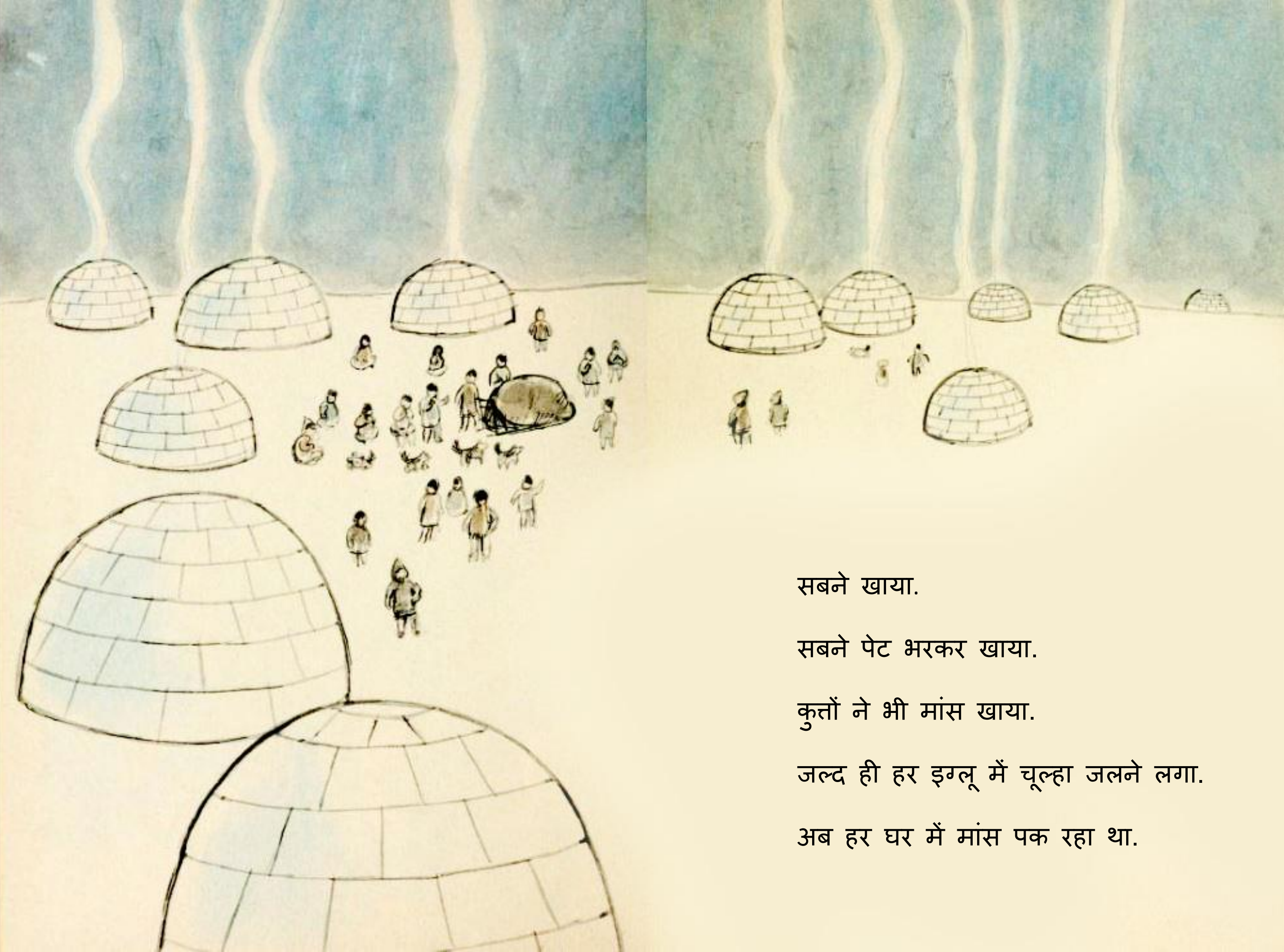
"भोजन भोजन!" लोग चिल्लाए.

औरतों ने जल्दी से वालरस को काट डाला.

उन्होंने सबको मांस के टुकड़े दिए.

सभी ने मांस खाया.





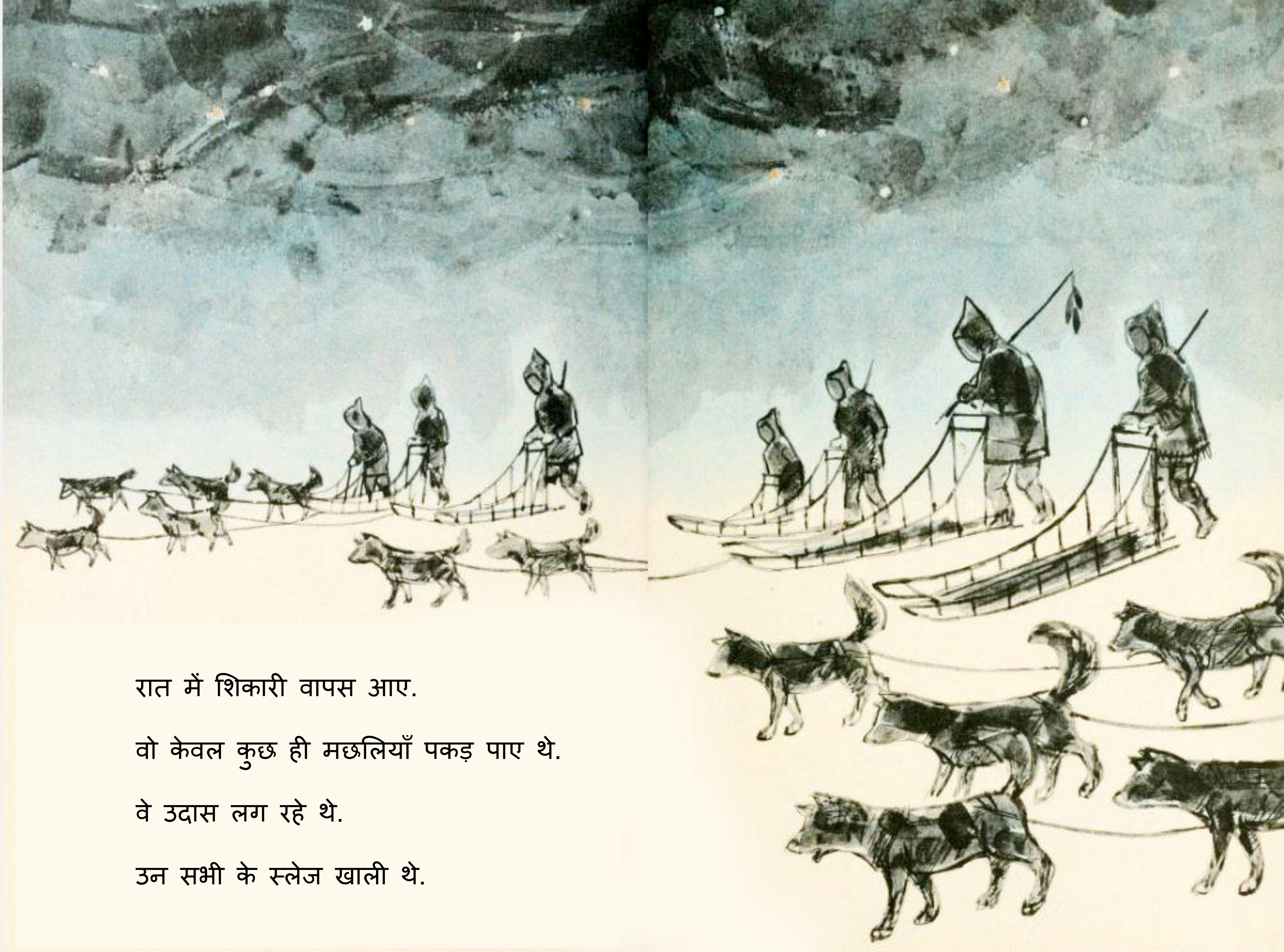
सबने खाया.

सबने पेट भरकर खाया.

कुत्तों ने भी मांस खाया.

जल्द ही हर इग्लू में चूल्हा जलने लगा.

अब हर घर में मांस पक रहा था.



रात में शिकारी वापस आए.

वो केवल कुछ ही मछलियाँ पकड़ पाए थे.

वे उदास लग रहे थे.

उन सभी के स्लेज खाली थे.

शिकारियों ने हवा में मांस की खुशबू सूँघी.

"मांस!" शिकारी चिल्लाए.

"वो मांस कहां से आया?"





ऊटा की मां ने उन्हें बताया,
"आज ऊटा ने एक वालरस का शिकार किया!"

"ऊटा ने!" शिकारियों ने आश्चर्य जताया.

"हमें उसके बारे में कुछ और बताओ,"
ऊटा के पिता ने कहा.

सब लोग ऊटा के चारों ओर इकट्ठे हुए,
फिर उसने उन्हें अपनी आपबीती सुनाई.

फिर ऊटा के पिता बोले.

"मेरे बेटे, आज तुमने एक बड़े आदमी का काम किया है.
कल से तुम बाकी आदमियों के साथ शिकार पर जाओगे."

"वाह!!" दूसरे शिकारी चिल्लाए.

ऊटा ने कुछ नहीं कहा.

वो उतना खुश था जितना कोई लड़का हो सकता था.





अंत में, ऊटा एक असली
शिकारी बन गया था.



अंत